ISSN 2321-4945

द्विभाषी

राष्ट्रसेवक

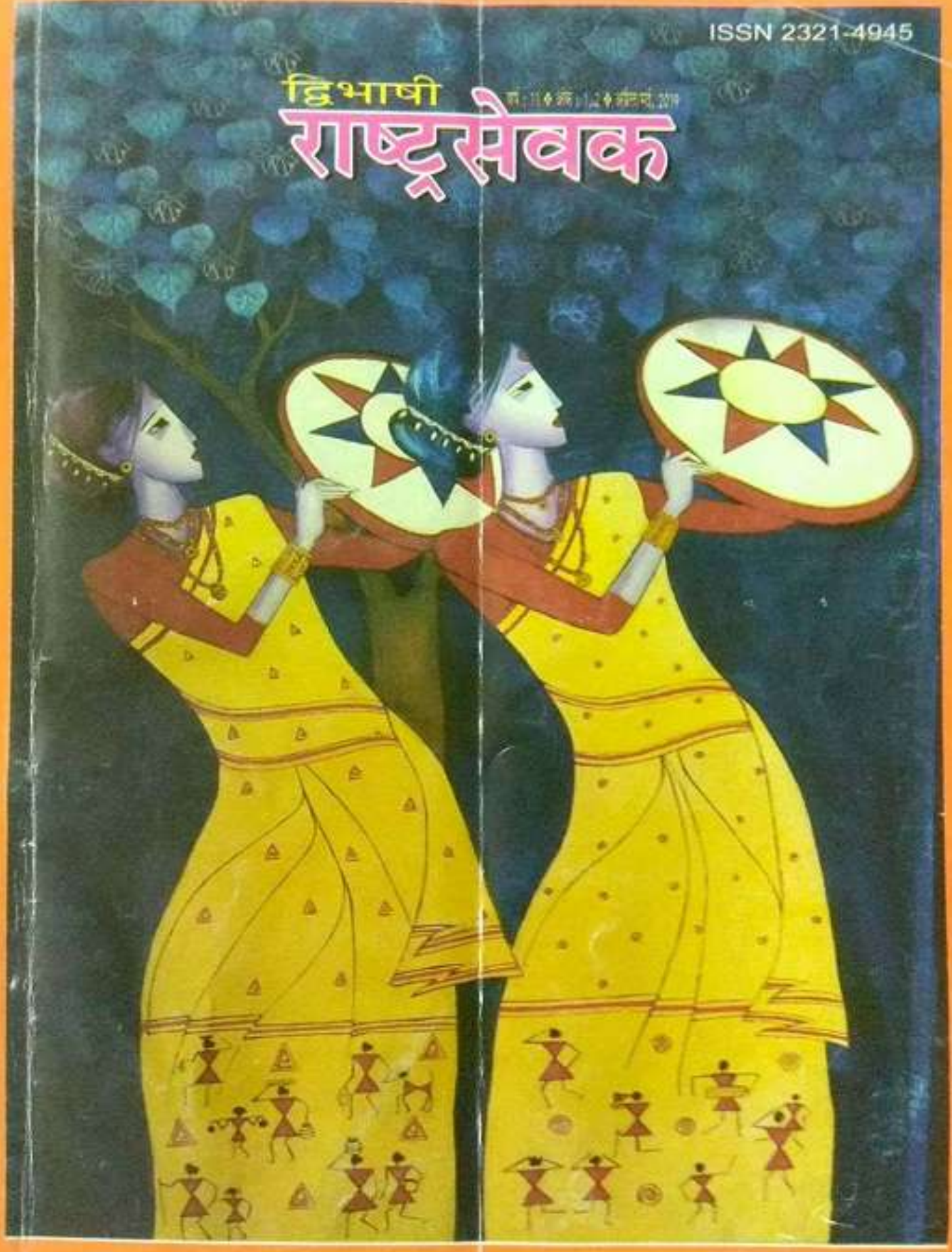

CS Scanned with CamScanner

एक हृदय हो भारत जननी

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

[केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित]

सलाहकार

श्री हरिकांत नाथ

डॉ. अच्युत शर्मा

डॉ. नारायण तालुकदार

प्रो. दिलीप कुमार मेधी

संपादक

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया

(मो. 9435340285)

कार्यकारी संपादक

श्री धीरेन चंद्र शर्मा

(मो. 6001523674)

शब्द-संयोजन व अलंकरण

रति कांत कलिता

वार्षिक शुल्क : दो सौ रुपये

अर्द्धवार्षिक : सौ रुपये

एक प्रति : बीस रुपये

प्रकाशक

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया

मंत्री, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

गुवाहाटी-781032

'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के हैं। संपादक या प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लेखादि भेजने का पता :

संपादक, द्विभाषी राष्ट्रसेवक

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,

रूपनगर, गुवाहाटी-781 032

फोन : (0361) 2462811, 2463394

फैक्स : 0361 - 2463394

Postal Rgd. No. GH-127/2019-2021

ISSN 2321-4945

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का

साहित्य-कला-संस्कृति विषयक मासिक मुख-पत्र

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

वर्ष : 11 अप्रैल-मई, 2019 अंक : 1, 2

विषय-सूची

हिंदी विभाग

• सामयिकी		2
• प्रेम और भाइचारे का प्रतीक - रंगाली बिहू	रामनाथ प्रसाद	3
• बहागीर बिया : असम में वसंत	अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी	6
• प्रासंगिकता का प्रश्न और कबीर की कविता	डॉ. अनुशब्द डॉ. चारु गोयल	9
• भक्त सम्राट गुरु रविदास	शंकर प्रसाद साहू	13
• यशपाल की कहानियों में यथार्थ चित्रण	पल्लबी दास	16
• विज्ञापनों में नैतिकता का सवाल	प्रवीण बोरा	20
• हमारा भारत/भूल गया क्यों इंसान (कविता)	आकाश गुप्ता	24
• समिति समाचार		25

অসমীয়া বিভাগ

• বিভিন্ন মনিষীৰ দৃষ্টিত বিহু আৰু বিহুগীত	মহম্মদ শিকদাৰ	31

लेखक/लेखिकाओं से अनुरोध : • 'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' के लिए भेजे जाने वाले लेखादि साहित्य, कला, संस्कृति विषयक होने चाहिए। • भेजे गये लेखादि साफ अक्षरों में या टाइप कराकर ही भेजें। • अनूदित लेखों के लिए मूल लेख का उल्लेख करना अनिवार्य है। • सभी कानूनी विवादों का निपटारा गुवाहाटी न्यायालय के अधीनस्थ होगा।

CS Scanned with CamScanner

प्रासंगिकता का प्रश्न और कबीर की कविता

✍ डॉ. अनुशब्द एवं डॉ. चारु गोयल

साहित्य के संदर्भ में प्रासंगिकता का अर्थ है किसी भी रचना या रचनाकार का कालजयी एवं कालजीवी होना। प्रासंगिकता समाजशास्त्रीय उपकरणों से तय होती है और इन समाजशास्त्रीय उपकरणों का संबंध केवल साहित्य से नहीं होता बल्कि यह इतिहास से भी अभिन्न रूप में जुड़ा होता है। रचना की प्रासंगिकता के संबंध में मैनेजर पांडेय का मत दृष्टव्य है-'कोई भी सार्थक रचना इतिहास की उपज होती है, लेकिन उसका अपना भी एक इतिहास होता है, जिसे वह स्वयं बनाती है। उसका वर्तमान होता है तो उसका अतीत भी होता है। उसके पाठकीय ग्रहण का वर्तमान होता है तो उत्पत्तिमूलक अतीत भी होता है। इन दोनों के द्वंद्वात्मक संबंध के बोध के आधार पर ही किसी रचना की प्रासंगिकता का निर्णय हो सकता है।' (आलोचना की सामाजिकता, पृष्ठ-292) कबीर के काव्य के संदर्भ में जब हम उपर्युक्त कथन की मीमांसा करते हैं तो पाते हैं कि कबीर के काव्य का संबंध न सिर्फ अपने समय और अतीत से है, बल्कि उसमें भविष्य की आहट भी है। यही कारण है कि कबीर जितने प्रासंगिक अपने समय में थे, कई मायनों में उससे ज्यादा प्रासंगिक आज नजर आते हैं।

कबीर जिस भारतीय समाज में पैदा हुए थे, वह बहुत उथल-पुथल का समय था। उसमें संस्कृति, धर्म और विचार की अनेक तेज धाराएं परस्पर टकरा रही थीं। एक ओर हिंदू समाज की भेदभाव पर आधारित जाति-व्यवस्था की संरचना थी तो दूसरी ओर इस्लाम था, जिसमें उग्रता थी। उसमें धार्मिक स्तर पर समानता के बावजूद सामाजिक विषमता थी। उसके विरुद्ध प्रेम की पीर का संदेश देने वाले सूफी संत थे। साधारण जनता इस भंवर जाल में फंसी हुई थी। हिंदू जनता जिस तरह जाति-व्यवस्था के भेदभाव और धार्मिक कर्मकांड की चक्की में पिस रही थी, उसी तरह मुस्लिम जनता इस्लाम की कट्टरता और कर्मकांड की चक्की में। इन दोनों के ऊपर राजसत्ता और शोषण का चक्र चल रहा था। यही देखकर कबीर ने कहा होगा-

चलती चक्की देखकर, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय॥

उस कठिन समय में भारतीय मनुष्य की मनुष्यता खतरे में थी। वह हिंदू या मुसलमान होकर अपनी चेतना और संवेदना को धर्म के हाथों गिरवी रख कर ही बच सकता था। वर्णव्यवस्था और सांप्रदायिकता ने मानव समाज को खंडित किया हुआ था। धर्म का आडंबरकारी रूप धर्म के वास्तविक स्वरूप का स्थान ले चुका था। अभिजात्यवादी प्रवृत्तियों ने मानव मानव के बीच की दूरी को और गहरा दिया था। ऐसे में कबीर ने अपने काव्य के माध्यम से न सिर्फ मानव एकता को स्वर दिया बल्कि यह उद्घोषणा कर डाली कि 'साईं के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय।'

ऐसे समय में एक ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी, जो उस काल के भारतीय समाज की समग्रता को जानता हो, साथ ही मनुष्य की मनुष्यता में जिसकी अटूट आत्मा हो। ऐसे ही व्यक्ति थे कबीर। उनके काव्य में उस समय की जटिल स्थिति का बोध है और उसके

CS Scanned with CamScanner